दिनांक **1** अप्रैल, **2018** को विवेकानन्द केन्द्र, कन्याकुमारी शाखा, राँची द्वारा ‘‘राष्ट्रवाद पर आसन्न संकट’’ विषय पर आयोजित गोष्ठी में माननीया राज्यपाल जी का अभिभाषण

मुझे विवेकानन्द केन्द्र, कन्याकुमारी शाखा, राँची द्वारा ‘‘राष्ट्रवाद पर आसन्न संकट’’ जैसे अहम गंभीर विषय पर आयोजित गोष्ठी में आप सभी विद्वानों के बीच सम्मिलित होकर अपार प्रसन्नता हो रही है। इतिहास साक्षी है कि हमारे देश के महान सपूतों ने असीम त्याग, बलिदान एवं कड़े संघर्ष का परिचय दिया है। इसी का परिणाम है कि **15** अगस्त, **1947** को हमारा देश ब्रिटिश दासता से मुक्त हुआ और विश्व के मानचित्र पर भारत का एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उदय हुआ। इन महान सपूतों ने आजादी की लड़ाई में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। मैं उन सभी सपूतों को नमन करती हूँ। हम सभी उन महान सपूतों का सदैव ऋणी रहेंगे जिन्होंने हमें एक आज़ाद मुल्क का नागरिक कहलाने का गौरव प्रदान किया है।

हम सभी को अपने उन महान सपूतों एवं पूर्वजों के जज़्बे को बनाये रखना होगा। देश की एकता और अखंडता के लिए सदैव तत्पर रहना होगा। इससे हमारा अस्तित्व जुड़ा हुआ है, यह हमारी माँ है। इसकी रक्षा के लिए, विकास के लिए तथा इसे सर्वशक्तिमान बनाने के लिए सभी संतानों को समर्पित भाव से कार्य करना होगा।

हमारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री भारतरत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने भारत राष्ट्र के सन्दर्भ में अपनी भावनाओं में कहा है–

भारत ज़मीन का टुकड़ा नहीं है,
जीता जागता राष्ट्रपुरूष है।
हिमालय इसका मष्तक है,
गौरी शंकर शिखा है।
कश्मीर किरीट है,
पंजाब और बंगाल दो विशाल कंधे है।
विध्यांचल कटि है,
नर्मदा करधनी है।

पूर्वी और पश्चिमी घाट दो विशाल जंघे है।
कन्याकुमारी इसके चरण है,
सागर इसके पग पखारता है।
पावस के काले-काले मेघ इसके कुंतल केश है।
चाँद और सूरज इसका आरती उतारते है।
यह वन्दन की भूमि है,
अभिनन्दन की भूमि है।
यह तर्पण की भूमि है,
यह अर्पण की भूमि है।
इसका कंकर-कंकर शंकर है,
इसका बिन्दु-बिन्दु गंगाजल है।
हम जियेंगे तो इसके लिए,
मरेंगे तो इसके लिए।

गर्व है कि हमारे देश के नागरिक राष्ट्रवाद की भावना से ओत-प्रोत है। वे देश के विकास के लिए चिंतनशील रहते हैं। राष्ट्र की गतिविधियों पर हमेशा मंथन करते हैं।...

... वैसे भी, किसी भी राष्ट्र की प्रगति के लिए उसके नागरिकों में राष्ट्रवाद की भावना का होना जरूरी है। यही भावना सभी लोगों को जाति, धर्म एवं ऊँच–नीच के बंधनों को समाप्त करते हुए एकता के सूत्र में पिरोती है।

''राष्ट्रवाद पर आसन्न संकट'' जैसे अहम गंभीर विषय पर पर गोष्ठी के आयोजन से नागरिकों में राष्ट्रवाद की भावना और प्रबल होगी। हमारे युवा देश की एकता एवं अखंडता की रक्षा के साथ–साथ राष्ट्र के विकास को सर्वोपरि स्थान देंगे। हमारा राष्ट्रवाद स्वामी विवेकानन्द और हमारी विरासत का राष्ट्रवाद है जो ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' और ''सर्वे भवन्तु सुखिंनः'' की अवधारणा पर आधारित है, हम तो यह भी नहीं कहते कि हम जिस रास्ते पर चलते हैं वही सही है, सत्य एक है विप्राः बहुधा वदन्ति यही हमारी संस्कृति का मूल मन्त्र है। हमारा राष्ट्र विविधता में एकता का सबसे अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करता है।...

... यहाँ विभिन्न जाति, धर्म, सम्प्रदाय के लोग मिल–जुल कर प्रेमपूर्वक रहते हैं। कुछ असामाजिक तत्व भूलवश अथवा अज्ञानवश जब राष्ट्रवाद को चुनौती देने का कार्य करते हैं तो हम सभी को उन्हें समझाना चाहिये। ये देश सभी भारतीय का है। इस पर सभी भारतीय का हक है।

मैं इस देश को क्षति पहुँचानेवाले सभी नागरिकों का आह्वान करना चाहूँगी कि वे हिंसा की रास्ता त्याग करें, शान्ति की राह अपनाकर विकास की मुख्यधारा से जुड़े।

जय हिन्द! जय झारखण्ड!